ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018

Innovation The Research Concept

राजस्थान के यूरोपीय पर्यटन में कर्नल जेम्स टॉड की भूमिका

दिनेश कुमार चारण
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
राज. लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान

सुदर्शना बारैठ
संकाय सदस्य
संस्कृत विभाग
मोदी शिक्षण संस्थान,
लक्ष्मणगढ़, सीकर

सारांश

दुनिया में भारतीय पर्यटन स्थलों का कोई सानी नहीं है। यहाँ पर पग–पग पर एक से बढ़कर एक रमणीक स्थान है। हमारे देष में हिमालय और केरल की हसीन वादियां.... है तो महाराष्ट्र के पठार और राजस्थान के रेगिस्तान.... भी है। और भी बहुत कुछ....! यहां असंख्य दुर्ग– धार्मिक स्थल अन्य महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, जहां दुनिया भर से लोग पर्यटन हेतु आते है। ध्यान रहे, रिपोर्टस बताती हैं कि विदेष से आने वाला प्रत्येक पर्यटक राजस्थान जरूर आना चाहता है। क्योंकि ऐसी ही निराली है राजस्थान की महिमा...!

मुख्य शब्द : उज्जवल, गौरवमय, शौर्य, सौन्दर्य, साहित्य, कला, थर्मोपल्ली, शरणागत, जौहर, वीरांगनाएँ, केसरिया, वचनबद्धता, स्वाभिमान।

प्रस्तावना

कर्नल टॉड के शब्दों में ''राजस्थान में ऐसा कोई राज्य नहीं जिसकी अपनी थर्मोपली न हो और ऐसा कोई नगर नहीं जिसने अपना लियोनीडास पैदा नहीं किया हो।''

चिरकाल से उज्जवल और गौरवमय राजस्थान का इतिहास शौर्य, सौन्दर्य, साहित्य और कला का अनुभव सामंजस्य प्रस्तुत करता है। मातृभूमि की रक्षा तथा स्वतंत्रता हेतु विभिन्न राजवंषो, शासकों, वीरों तथा सर्वसाधारण जनता द्वारा किए गए उत्कट संघर्षों ने राजस्थान के इतिहास को गौरवान्वित किया है। यह प्रदेष वीरत्त्व एवं शौर्य की क्रीड़ास्थली रहा है। बलिदान और प्राणोत्सर्ग की आकांक्षाएं, त्यागपूर्ण साधनाएं, वीरांगनाओं के जौहर की भभकती ज्वालाएं मात्र शौर्य और वीरत्त्व नहीं है अपितु उनके प्रेरक वे आदर्ष और जीवन मूल्य है जिन्होंने उनकी वीरता को एक अनूठी गरिमा और महिमा से मंडित कर दिया है। त्याग और उत्सर्ग की वीरोचित परम्पराओं के प्ररेक आदर्ष में मातृभूमि प्रेम, स्वतंत्रता, स्वामिभक्ति, स्वाभिमान, शरणागत–वत्सलता, वचन निर्वाह, सर्वधर्म–निष्ठा तथा नारी के शील एवं सतीत्त्व की रक्षा आदि प्रमुख है। यहाँ की धीरता और वीरता की निराली परम्पराएं रही है, जिनके उत्कृष्ट आदर्षों एवं जीवन मूल्यों ने राजपूत जाति को एक उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजस्थान में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में विदेषी पर्यटक आते हैं, जिसमें यूरोपीय संख्या सबसे अधिक होती है। छात्र जीवन में मैं कई बार इस विषय पर सोचता था कि जब यूरोप इतनी अच्छी जगह तो ये पर्यटक राजस्थान में क्यों आते है ? जबकि इन पर्यटकों से हमारे यहाँ लाखों लोगों को रोजगार मिलता है और प्रदेष को बड़ा लाभ। यह बात मुझे समझ में तब आई जब मैंने कर्नल जेम्स टॉड की रचनाओं को पढ़ा। उनकी रचनाओं में जिस ढ़ग से राजस्थान का यथातथ्य उल्लेख हुआ है, उसे पढ़कर शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा मिलेगा, जिसके हृदय में इस भूमि को देखने की ईच्छा जाग्रत न होती हो ! इसीलिए राजस्थान, विदेषी व यूरोपीय पर्यटकों की पहली पसन्द रहता है।

रणथम्भौर के चौहान शासक ने शरणागत की रक्षा के लिए अपना राज्य तक न्यौंछावर कर दिया। रणथम्भौर का वह वैभव फिर कभी नहीं लौटा परन्तु उसके खण्डहरों के कण–कण में राव हम्मीर की यषोगाथा बिखरी हुई है। मेवाड़ के महाराणा प्रताप, जालौर का वीर कान्ड़दे, षिवाणा के चौहान वीर सातल, सोम और राठौड़ कल्ला, गागरोन का अचलदास खींची एवं चितौड़ के वीर जयमल और पत्ता आदि वीरता के इतिहास के कुछ ऐसे ही अमर नाम है, जिनके साथ स्वातन्त्रय एवं स्वाभिमान प्रेरित वीरता के रोमांचक साकों की स्मृतियाँ जुड़ी हुई है। केसरिया और जौहर यहाँ बच्चे–बच्चे की जुबान पर है। राजपूताना के इन महान आख्यानों को यूरोपीय जगत से अवगत कराने का श्रेय मैं कर्नल टॉड को देता हूँ।

जेम्स टॉड का जन्म 20 मार्च 1782 ई. में इंग्लैण्ड के स्कॉटलैण्ड में एक उच्चवर्गीय परिवार में हुआ था। षिक्षा प्राप्त करने के बाद 1800 ई. में वे ईस्ट इण्डिया कम्पनी में इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए। भारत में पहुँचते ही उन्हें दिल्ली के पास पुरानी यमुना नहर के सर्वे व मरम्मत के कार्य में लगाया गया। कुछ समय बाद उन्हें लेफ्टीनैंट का पद प्राप्त हुआ। इसके बाद जेम्स टॉड की नियुक्ति ग्वालियर में एजेन्ट के पद पर हुई। यहां से उन्हें राजस्थान भ्रमण के अवसर भी मिले। जून 1806 के बाद से निरन्तर वे उदयपुर व अन्य स्थानों पर आते रहे। इस दौरान उनका राजपूत शासको से निकट सम्पर्क हुआ। जेम्स टॉड राजपूत जाति के चरित्र व इस भूमि से इतना प्रभावित हुए कि वे इस राज्य के इतिहास लेखन की ओर अग्रसर होने लगे। उन्होंने ऐतिहासिक सामग्री जुटानी प्रारम्भ कर दी।

1822 में जेम्स टॉड की नियुक्ति उदयपुर में रेजीडेंट के पद पर हो गई। अब राजपूत शासको ने भी जेम्स टॉड के इतिहास सामग्री संग्रहण में पूरी सहायता प्रदान की। इसी दौरान उन्हें कम्पनी से कर्नल का रैंक भी प्राप्त हो गया था। उदयपुर में उनकी मुलाकात ज्ञानचन्द जैन से भी हुई जिन्होंने समस्त संकलित सामग्री के अनुवाद में सहयोग किया। कर्नल टॉड को अपने मिषन के लिए धन भी व्यय करना पड़ा और राजपूत शासकों से मित्रता के कारण अपना पद भी गवाना पड़ा। परन्तु उनका उत्साह कम नहीं हुआ। राजस्थान से एकत्रित समस्त साहित्यिक सामग्री व अभिलेखों को लेकर कर्नल टॉड इग्लैण्ड़ लौट गये वहां अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद भी उन्होंने समस्त साक्ष्यों का गहन अध्ययन व विष्लेषण कर 1829 में अपना ग्रंथ प्रकाषित किया और नाम दिया – ।ददंसे ंदक ।दजपुनपजपमे व ित्रेंजीदण डॉ. एच.सी. जैन ने इस ग्रंथ को राजस्थान के इतिहास लेखन में मील का पत्थर मानते हैं। राजस्थान का प्रदेषवाची उल्लेख भी सर्वप्रथम कर्नल टॉड ने ही किया था।

अपने अध्ययन के दौरान कर्नल टॉड को विलियन जॉन्स का मत सही प्रतीत हुआ कि हिन्दुओं की प्राचीन एषियाई सभ्यता को वहीं देन रही है जो यूनानियों ने यूरोपिय सभ्यता का दी थी। कर्नल टॉड स्वयं यूरोपीय इतिहास के ज्ञाता थे। वह रोमानी विचारधारा का पक्षधर थे। रोमानी दर्षन के इतिहासकारों का लेखन काव्यात्मक तथा कलात्मक अभिव्यक्ति से पूर्ण होता था। यही भाषाई श्रेष्ठता और ओजस्वी साहित्यिक अभिव्यक्त कर्नल टॉड के इतिहास ग्रन्थ ।ददंसे ंदक ।दजपुनपजपमे व ित्रेंजींद व ज्तंअमसे पद ॅमेजमतद प्दकपं में दृष्टिगत होती है।

एक प्रष्न और मेरे मस्तिष्क में रहता था कि एक अंग्रेज की राजस्थान में इतनी दिलचस्पी का क्या कारण रहा होगा ? इसक उत्तर मुझे औझाजी की पुस्तक ''राजपूताने का प्राचीन इतिहास'' में मिला। यहां पर गौरीषंकर हीराचन्द औझा ने कर्नल जेम्स टॉड के व्यक्तित्त्व के बारे में लिखा है कि टॉड का कद मझोला था। उसका शरीर हष्ट–पुष्ट और चेहरा प्रभावषाली था। उसकी शोधक बुद्धि बहुत बढ़ी हुई थी। वह बहुश्रुत, इतिहास प्रेमी और असाधारणवेत्ता, विद्यारसिक तथा क्षत्रिय प्रकृति का निराभिमानी पुरूष था। यही कारण था कि राजपूतों की वीरता और आत्मत्याग के उदाहरणों के जानने से उसको राजपूताने के इतिहास से बड़ा प्रेम हो गया था।

निष्कर्ष

कर्नल टॉड की लेखनी इतनी मार्मिक और प्रभावोत्पादक है कि आज लगभग दो शताब्दियों बाद भी यूरोपीय उसके गन्थ को पढ़कर रोमांचित हो उठते है और वहीं रोमांच ही उन्हें राजस्थान में खींचकर ले आता है। अतः यूरोप में राजस्थान को जो गौरव व वैभव प्राप्त है उसका श्रेय कर्नल टॉड को ही दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. *टॉड, कर्नल जेम्स – Annals and Antiquities of Rajasthan*
2. *वही – राजस्थान का इतिहास (अनुवादक कालूराम शर्मा)*
3. *वही – Travels in Western India*
4. *जैन, एच.सी. एवं माली – राजस्थान*
5. *औझा, गी. एच. – राजपूताने का प्राचीन इतिहास,*
6. *माथुर, कमलेष – राजस्थान का इतिहास*
7. *सिंह, राघवेन्द्र – राजस्थान के दुर्ग*
8. *बारहठ, कृष्णसिंह – राजस्थान का इतिहास*
9. *चारण, श्यामल दास – वीर विनोद*
10. *शर्मा, जी. एन. – राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास*